International Journal of Social Science and Education Research
www.socialsciencejournals.net
Online ISSN: 2664-9853, Print ISSN: 2664-9845
Received: 11-03-2022, Accepted: 26-03-2022, Published: 11-04-2022
Volume 4, Issue 1, 2022, Page No. 17-19

बालिकाओं की चिंताजनक दशाः कारण एवं निवारण

साधना अग्रवाल[1], ममता बाकलीवाल[2]
[1] सहायक प्राध्यापक, राजीव गॉधी महाविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत
[2] प्रोफ़ेसर, विभागाध्यक्ष शिक्षा संकाय, राजीव गॉधी महाविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
"यत्र पूज्यन्ते नारी, तत्र रमन्ते देवता" अर्थात् जहॉ नारी की पूजा होती है वहॉ देवता निवास करते हैं। प्राचीन समय से ही भारतीय संस्कृति में नारियों का अपना गौरवशाली स्थान रहा है। लेकिन धीरे–धीरे समय परिवर्तन के साथ भारतीय नारी की स्थिति में अनेक परिवर्तन हुये हैं। प्राचीन समय से लेकर आज तक की नारी की स्थिति में क्या–क्या परिवर्तन हुऐ हैं? और क्यों हुये है? तथा इस स्थिति के जिम्मेदार कौन हैं? शोध पत्र द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है। शोध हेतु भोपाल शहर के सभी आयु वर्ग के युवा/वयस्क, पौढ़, महिला/पुरूष को अलग–अलग वर्ग में विभाजित किया है तथा साक्षात्कार विधि द्वारा उनके विचार जानने का प्रयास किया हैं। निष्कर्ष में यह पाया गया कि नारी को कुछ करने के लिए अपनी ही आन्तरिक शक्तियों को जीवित करना होगा, उन्हे और अधिक शक्तिशाली बनाना होगा, तभी वह अपने स्वयं के लिये, परिवार, समाज तथा देश के लिए कुछ कर पायेंगी ।

मूल शब्दः बालिकाओं, चिंताजनक, दशा, कारण, निवारण

प्रस्तावना
देवी पद्मावती माता, धर्मव्रती आर्यिका माताजी, विद्या की देवी सरस्वती जी,धन की देवी लक्ष्मी जी आदि अनेक रूप में नारी शक्ति गुणों की पूजा–अर्चना की जाती है। धर्मग्रन्थों में भी कहा गया है कि ''यत्र पूज्यन्ते नारी, तत्र रमन्ते देवता'' अर्थात् जहॉ नारी की पूजा होती है वहॉ देवता निवास करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारियों का अपना गौरवशाली स्थान रहा है। मुगलों एवं अंग्रेजों की हुकूमत के अधीन रहकर भी बालिकाओं ने अपने अस्तित्व को संजोय रखा। राजा भृतृहरि की पत्नी रानी पिंगला की कहानी से हम सभी अवगत है जिसमें पति द्वारा धोखा दिए जाने पर गणिका ने चारदीवारी में रहकर, नृत्य करके लोगों का मनोरंजन करते हुए अपने अस्तित्व को बचाया। तत्पश्चात् राजा द्वारा गणिका को दलदल से बाहर निकाला। तब ज्ञातव्य हुआ कि एक असामाजिक तत्व द्वारा उसको कीचड़ में फंसना पड़ा और महापुरूष, ज्ञानीपुरुष द्वारा ही उसका उद्धार किया गया। हम सब को भी ऐसे सकारात्मक कदम उठाने चाहिए। इसके फलस्वरूप देशकाल, स्थान तथा परिस्थितिनुसार बालिकाओं की शिक्षा–दीक्षा, रहन–सहन आर्थिक स्थिति में यथोचित परिवर्तन होते रहने के बावजूद अधिकांशतः बालिकाओं की दशा एक विचारणीय, चिन्तनीय पक्ष ही रही है जबकि नारी की भूमिका 'श्जगत जननी, ष्नारी नर की खान'' ऐसे सृष्टि सृजनशील वाक्य से सम्मानित सुशोभित होती आयी है। तत्पश्चात् आदिकाल से अब तक ऐसा दिन नहीं जाता जब समाचार पत्र – पत्रिकाओं में बालिकाओं के उत्पीड़न का दुरूखद, असहनीय समाचार न हो जिसको पढ़कर, सुनकर अत्यंत खेद होता है। कई बार ऑखे नम होती हैं तो बहुत बार दरिन्दों, असामाजिक तत्वों, प्रशासकों और स्वयं पर भी क्रोध आता है। मन मस्तिष्क में अनेकानेक विचार कौंधते हैं कि कोई देव, देवी, महापुरूष आगे आये और इस दत्त पीड़ा से बालिकाओं को उबारे। महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में अनेकानेक सरकारी, प्राइवेट योजनाऐं चलाई जा रही हैं। लेकिन नारी की दिशा और दशा में सुधारने हेतु प्रयास उतने सफल सिद्ध नही हुए हैं जितने कि होने चाहिए। प्रयास जारी हैं। बालिकाओं के अस्तित्व को बचाने, उनके संरक्षण और सशक्तीकरण को सुनिश्चित करने के लिए समन्वित और सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता की पूर्ति हेतु सरकारी स्तर पर ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' ''लाड़ली लक्ष्मी योजना'' जैसी अनेकों योजनाऐं चलाई। इसी प्रकार राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय स्तर पर चलाये जा रहे अभियानों के माध्यम से बालिकाओं की सुरक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित कर लोगों को जागरूक किया जा रहा है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की संयुक्त पहल द्वारा कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम, बालिकाओं के अस्तित्व को बचाना, उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना और बालिकाओं की शिक्षा तथा भागीदारी सुनिश्चित करना मुख्य उद्देश्य रहा है। इस उद्देश्य की सफलता हेतु महिलाओं के साथ–साथ पुरूषों की सक्रिय भागीदारी, सहभागिता और समर्थन अत्यावश्यक है।

उद्देश्य
वर्तमान समय में बालिकाओं की स्थिति का अध्ययन करना।

परिकल्पना
वर्तमान समय में बालिकाओं की चिन्ताजनक दशा ज्ञात करना।

अध्ययन विधि एवं उपकरण

शोध कार्य भोपाल शहर के विभिन्न क्षेत्र के तथा विभिन्न आयु वर्ग के 50 महिला/पुरूष तक सीमित है। इस हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार उपकरण का उपयोग किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

बेटियों के बिना संसार का अस्तित्व ही नहीं है। आज की बेटी कल की जगत–जननी होगी। बेटी ने सामाजिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक, आर्थिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली भूमिका का निर्वहन किया है। इसलिए हे बुद्धीजीवियों, महानुभावों बेटियों को पावन पृथ्वी पर उन्मुक्त गगन में विचरण करने के लिए अवतरित होने दो। बेटियों को प्यार–दुलार ममता भरे आंचल से सीचों, विपत्तियों के झंझावातों से बचाओं, दुर्जनों का सामना करने के अनुरूप सार्मथ्यवान बनाओ क्योंकि नारी में दुर्गा, काली, सरस्वती, पदमावती माता आदि जैसी दैवीय शक्तियॉ विद्यमान है। नारी निर्मल नहीं है, वह पृथ्वी जैसी सहनशील, सागर जैसी गहरी, पहाड़ जैसी अडिग, वृक्ष जैसी उदार, लक्ष्मीबाई जैसी साहसी, कल्पना चावला जैसी गगनभेदी, पी.टी. ऊषा जैसी उड़नपरी, मदरटेरेसा जैसी सेविका, अहिल्या बाई, मेरीकॉम, इत्यादि रूपों में देखी जा सकती है। कहा भी गया है कि बेटी ने ही बहन के रूप में स्त्री की रक्षा करना हमें सिखाया है। मॉ के रूप में निःस्वार्थ प्रेम, ममता, त्याग तथा बेटी के रूप में हमें दान करना सिखाया है और हम है कि ऐसी बेटी पर अत्याचार सदियों से करते आ रहे है।

वर्तमान समय में बालिकाओं की चिन्ताजनक दशा–इतना सब कुछ होने पर भी बालिकाओं की वर्तमान स्थिति निराशाजनक एवं चिन्ताजनक है। इन हालातों के कारण क्या हैं? और इनका समाधान कैसे हो सकता है? बालिकाओं की असुरक्षा के अनेकानेक कारण हो सकते हैं। ऐसे में हम किसी एक की ओर इंगित करते हैं तो अंगूठा अन्यत्र तथा मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठका तीनों उंगली अपनी ओर होंगी यानि स्वयं से संबंधित कारण अधिक हो सकते हैं और समाधान के प्रयास भी स्वयं के द्वारा अधिक किये जा सकते हैं। इस बात से मेरी बहिनें असहमत भी होगी क्योंकि नारी ही नारी की दुश्मन हैं लेकिन यह बात पुरातन काल से आज तक चरितार्थ होती आई है। हम सब समाचार पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से पढ़ते व सुनते आयें हैं कि भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, चोरी, देह व्यापार आदि घिनौने कुकर्मों में महिलाऐं बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। धन लोलुपता आदि के चक्कर में समाज विरोधी कार्यो में लिप्त हो रही हैं। जहॉ एक ओर लड़कियॉ अपने ही अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए खुद को एक अहम् मुकाम तक लाना चाह रही हैं वहीं महिलाऐं ही अपने अस्तित्व के साथ खिलवाड़ कर रही हैं। हिंसा का नया रूप हमारी संस्कृति और हमारे संस्कारों का उपहास है, जबकि नारी बिना सृष्टि संभव नहीं है।

बालिकाओं की चिन्ताजनक स्थिति के कारण एवं उपाय– वास्तव में बालिकाओं की असुरक्षा का जिम्मेदार कौन है? इस ज्वलंत समस्यात्मक प्रश्न के कारण, समाधानात्मक कदम जानने हेतु समाज के सभी आयु वर्ग के सदस्यों के मध्य चर्चा की। युवाओं, पुरूषों और महिलाओं द्वारा व्यक्त विचारों के मुख्य अंश निम्नांकित प्रस्तुत किये गये है –

1. 14 से 18 वर्ष के 80 प्रतिशत किशोरों का कहना है कि बेटियों कीा सुरक्षा/असुरक्षा यह व्यक्तियों की मानसिकता पर निर्भर करता है। जिस परिवार में संकीर्ण मानसिकता वाले लोग अधिक होगें वहॉ लड़कियों को घरेलू हिस्सा जैसे कार्यो को झेलना पड़ता है। हर समय लड़कियों को दोषी नही माना जा सकता, उनको भी अपनी इच्छा से कपड़े पहनने, घूमने–फिरने, पढ़ने–लिखने की आजादी है। हॉ! इतना जरूर है कि लड़कियां आकर्षण का केन्द्र न बने और लड़के इनकी ओर आकर्षित न हो। दोनों स्वस्थ सोच के साथ संयमित, मर्यादित व्यवहार करें। किसी–किसी ने मेनका व विश्वामित्र का भी उदाहरण प्रस्तुत किया।
2. 19 से 28 वर्ष के 50 प्रतिशत व्यस्कों ने बताया है कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण बालिकाओं के साथ दुर्व्यवहार होता है तथा लड़कियों का कहना था कि घर से बाहर तथा लिंगभेद होने से, माता–पिता का उचित प्यार न मिलने से वे भटक जाती है और वे प्रताड़ना का शिकार हो जाती हैं।
3. 29 से 45 वर्ष की 70 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि आर्थिक तंगी, पदोन्नति की चाह, पुरुषों द्वारा मादक पदार्थो का सेवन, लगातार हो रहे मानसिक प्रताड़ना के कारण अपना धैर्य, साहस खो बैठती हैं और अपने परिवार की आवश्यकता पूर्ति हेतु असामाजिक तत्वों के हाथों में पड़ने के कारण जाने– अनजाने में गलत मार्ग की ओर प्रवृत्त हो जाती है। ऐसे दृष्टांत हम सबने पढ़े व सुने भी होंगें।
4. 46–64 वर्ष के 85 प्रतिशत व्यक्ति (महिला व पुरूष) का कहना था कि अश्लील साहित्य अपना प्रभाव छोड़ता है। इसके शब्द, उत्तेजना, क्रोध, काफी हद तक अपराध की ओर प्रेरित करते हैं। आज ऑखों के समक्ष ऐसे दृश्य और शब्द आसानी से मिल जाते है जिससे मानसिक पतन की आशंका बढ़ जाती है। इंटरनेट द्वारा परोसा गया अध–कचरा अश्लील ज्ञान बच्चों के दिमाग को कुंठित कर रहा है।
5. 65–77 वर्ष तक के 90 प्रतिशत वृद्ध सम्मानीय सदस्यों का मानना है कि लड़कियों को जरूरत से ज्यादा स्वतंत्रता देना, मास–मीडिया द्वारा अश्लीलता का परोसना तथा पाश्चात्य की तर्ज पर दिखावटी, बनावटी, चकाचौंध, दिखावा इत्यादि कारणों से हमारी बहू–बेटियॉ असुरक्षित महसूस करती हैं। वे दिन जाने कहॉ गये जब एक की बेटी पूरे परिवार, गॉव व शहर की बेटी कहलाई जाती थी। उसका मान सम्मान, सत्कार होता था। काश वो दिन लौट आये। यही तो सबसे बड़ी समस्या है औरत ही औरत की सबसे बड़ी दुश्मन रही है तथा वो इस दुर्दशा का शिकार है। ना जाने कब सोच में बदलाव आयेगा। जब तक प्रत्येक नारी अपना महत्व नहीं समझेगी तब तक कोई पुरूष उसे क्या महत्व देगा? सबसे दुरूख की बात यही है कि अपना अस्तित्व मिटाने में खुद महिलायें ही सहयोग कर रही है। ऐसा दुःख बुजर्ग महिलाओं ने अपने अनुभवों से व्यक्त किया।

निष्कर्ष

उपर्युक्त चर्चा के दौरान निष्कर्षतयः कहा जा सकता है कि उपर्युक्त व्यक्त कारणों को दूर करने के लिए समस्त मानव जाति को एकजुट होकर सकारात्मक प्रयास करने होगें। ''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत'' अर्थात जो व्यवहार स्वयं

को सही नहीं लगे उसे दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए। 'जीओ और जीने दो' 'क्षमा वीरस्य भूषणं' 'अहिंसा परमोधर्मः' ऐसे अन्य नीति सुक्तियों को यदि हम सब अपने जीवन में उतार लें तो संसार का कोई भी प्राणी दुःखी नहीं होगा, लेकिन इसके लिए समाज को भी सहयोगात्मक रवैया अपनाना होगा। जहॉ भी गलत होते हुए देखें, वहॉ प्रत्येक प्रत्यक्षदर्शी को इसका विरोध करना होगा, हौंसला बढ़ाना होगा। जिससे अपराध तो कम होंगे साथ ही साथ समाज के लोग जागरूक भी होंगे। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा जगह–जगह शहर–दर–शहर नुक्कड़ नाटकों का आयोजन कर बड़े पैमाने पर पर संदेश देना होगा– कि महिलाओं को डरने की जरूरत नहीं है वरन् निर्भय बन कर, एक जुट होकर मनचलों, असामाजिक तत्वों को सबक सिखाना आवश्यक है। नारी को अपनी आतांरिक शक्तियों को शक्तिशाली बनाना होगा। परमार्थ स्वरूपा नारी ही नारी के दुःखों को बेहतर समझ सकती है इसलिए सबसे पहले बालिकाओं की सुरक्षा हेतु आगे आना होगा। बालिकाओं को पूरी तरह शिक्षित करना होगा।

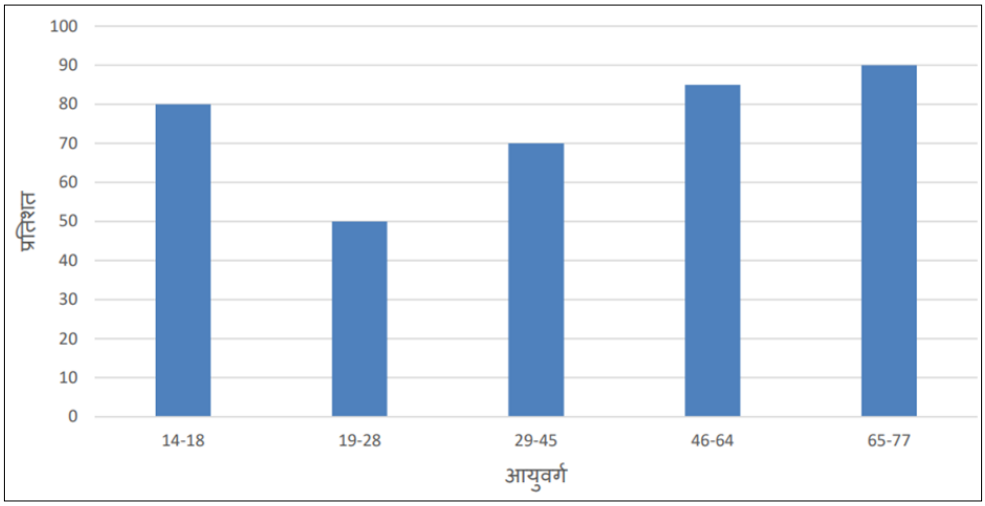

चित्र 1: ग्राफ़िक विवरण

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कपिल, एच.के. (2008); सांख्यिकी के मूलतत्व, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
2. गैरिट, ई. हेनरी (2007); शिक्षा और मनोरंजन में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3. पाठक, पी.डी. (1986); शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. शास्त्री, ब्र. प्रदीप; जिनभारती संग्रह (जिनवाणी), श्री दिगम्बर साहित्य प्रकाशन समिति, जबलपुर।
5. तुलसीदासजी, श्रीमदगोस्वामी (सं. 2060); श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर।